1910

श्री जानकीवल्लभो विजयतेतराम्

श्रीमते हनुमते नमः

अथ

अष्टयामपदावली

सुदृढ़ रसिकानन्य कुलभूषणाचार्य्य
श्री १००८ श्री स्वामी
अग्रदेवाचार्य्य कृत।

जिसको—
झांसी दतिया निवासी रसिकानन्य श्रीसीतारामीय
पण्डित गोविन्ददासात्मज पण्डित भगवानदास
रावत ने रसिक सज्जनों के अनुमोदनार्थ
प्रकाशित किया।

सर्वाधिकार सुरक्षित।

प्रथमवार] ५०० सं० १९६५ वै० [मूल्य प्रेम

आ १०९
महर्षि वाल्मीकि शोध संस्थान
1910
अयोध्या
श्री ... सेवा ट्रस्ट

❀ श्री मज्जानकीवल्लभो जयति ❀

भूमिका

यद्यपि प्राचीन ऋषिमुनि महात्माओंने गोप्य तथा प्रगटरूपेण श्री सीताराम उपासनामें अनादि शृंगार रस वर्णन करतेही चले आये, जिनके अनेक संस्कृत ग्रंथ जो अद्यापि अप्रकाशित हैं, कतिपय रसिक अनन्य महात्माओं के पुस्तकालय में भरे पड़े हैं। परन्तु इस शृंगार रसका पूर्ण उद्गार हमारे पूर्व आचर्य्यों में से श्री १०८ श्री स्वामी अग्रदेवाचार्य्य जी ने १७०० शताब्दी में विशेष रूप से किया। उक्त आचार्य्य को श्रीस्वामिनीजू ने कृपाकर प्रत्यक्ष दर्शन दी थी। आप श्रीसीताराम उपासनामें शृंगार रस प्रकाशन के अग्रणीय आचार्य्य हुये। यह सर्वसज्जनों को विदित है कि आपने कई ग्रंथ निर्मान किये, अग्रसागर, ध्यानमञ्जरी पदावली, अष्टयाम, कुण्डलिया आदि। उपरोक्त श्री स्वामी श्री अग्रदेवाचार्य्य जी के निर्मित ग्रंथों में से कुछ प्रकाशित भी होचुके हैं, परन्तु समग्र रचना इनकी अबतक अप्राप्य है। इनकी रचनाही का किंचित अंशरूप यह अष्टयाम पदावली आप पाठक रसिक महानुभावों के करकमलों में उपस्थित है। इस ग्रंथके प्रकाशन का कारण यह है कि जिस समय उक्त श्री स्वामीजी का संस्कृत अष्टयाम मेरे दृष्टिगोचर हुआ तो मेरे चित्त में एकायक यह प्रवल उत्कण्ठा उत्पन्न हुई कि यदि इन्ही श्री स्वामीजी के अष्टयाम आदि

लीला सम्बन्धी गायन पद भाषामें हों, जिन्हें सर्वसाधारण हृद-यंगम करसकें तो अति उत्तम होगा, कारण कि श्री स्वामी जी की सुधारस सानी वानी के पद भाविक प्रेमीजनों जो अनन्य श्रृंगारी हैं वह प्राप्त कर परम रहस्य अवगाहन करेंगे।

इस प्रवल भावना से प्रेरित मैं इनके पद्यात्मक अष्टयाम तथा अन्य श्री स्वामी जी की बानी के अन्वेषण में तत्पर होगया और संतत पता लगाते लगाते अन्तमें ललितपुर (जिला झाँसी) में श्री हनुमानदास जी चौबे के प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकालय में जिसमें बहुसंस्था में कईयक अपूर्व ग्रंथ आजभी मौजूद है, यह उक्त स्वामी जी का निर्माणित ग्रंथ श्री अग्रसागरान्तर्गत श्री रघु-नाथ चरितामृतादि ग्रंथ प्राप्त हुआ। चिरकाल घोर अन्वेषण का फलस्वरूप यह पदवध्य ग्रंथ है, जिसमें जन्म से लेकर रावणवध पर्यंत तथा षडऋतु विहार, अष्टयाम आदि लीलाके पद जो समय २ पर गानेके राग रागिनियों से युक्त वर्णित है।

फिरभी इस अमृतरूपी ग्रंथको पाकर और भी तृषारूपी लालसा बढ़ी, तब कईयक महात्मन् द्वारा स्फुट पद भी प्राप्त हुये अब उक्त अष्टयामपद्यावली ग्रंथ पूर्ण संग्रह जान इस ग्रंथ के संशोधन की इच्छा तीव्र हो पड़ी कि किसी काव्यवेत्ता से परामर्श लूं, परन्तु जब संत महात्माओं से यह सम्मति लीतो उत्तर मिला कि छेक महात्माओं के अक्षरों में काव्यदृष्टि से हेरफेर करना श्रेय-कर नहीं। न जाने कौन प्रकारका कौन छंद उन्होंने रचा। छंद

अनंत हैं कोई सरवज्ञ नहीं होसकता फिर देशकालान्तर पदध्वनि अगनित प्रचलित रहती है अस्तु श्री स्वामी अग्रदेवाचार्य जी महाराज ने जो कुछ भी लिखा सब समझहोकर रखा होगा, अथवा प्रेमोन्मत्त दशा में लिख गये हों, वह सब आर्ष प्रयोग के समान सर्वथा माननीय है। आचार्य की वानी भगवद्वानी के तुल्य है, अतएव इस ग्रंथ में जो कुछ त्रुटि रहगई हो उसके निमित्त सर्व सज्जनों से क्षमाप्रार्थी हूँ।

दीन किंकरः—

पंडित गोविन्ददासात्मज

भगवानदास रावत।

संस्थान

❀ श्री प्रियापरतन्त्राय श्रीजानकीवल्लभाय नमः ❀

❀ श्रीमते हनुमते नमः ❀

श्रीमत्यै श्री चारुशीलायै नमः श्रीमत्यै श्रीचन्द्रकलायै नमः

❀ अष्टयामपदावली ❀

श्रीस्वामी श्रीअग्रदेवाचार्य कृत

वन्देगुरुं गुणनिधिं गुणतः परंच श्रीजानकी रघुवरं हि पुनः कृपालुं ।
श्री वायुनन्दनमनन्त बलप्रतापं सर्वाननन्यरसिकानति रामभाजः ॥

अष्टसखियों को वन्दना

सर्वासां सुसखीनां तु प्रेरिकां गुणसागराम् । जानक्याः प्रेमप्रेष्ठां कोकाविद्याविशारदाम् ॥ १ ॥ रसिकानामाचार्यातां वीणावादनतत्पराम् । दम्पत्योः केलिमर्मज्ञां वन्दे चन्द्रकलां सखीम् ॥ २ ॥ चारुशीलां सखीं वन्दे सर्वाभरणभूषिताम् । गानविद्या प्रवीणानां कुशलां रसरूपकाम् ॥ ३ ॥ सुन्दरांगीं हेमरूपां बिमलां मन्दगामिनीम् । वन्दे तां सुसखीं प्रेम्णा दम्पत्योः रसवर्द्धिकाम् ॥ ४ ॥ वन्देऽनं-

गकलाभिज्ञां तां मदनकलाभिधाम् । मन्दोदरीं महा-
प्रज्ञां दम्पत्योः प्रेमदायिकाम् ॥ ५ ॥ हेमांगीं चन्द्र-
वदनां हेमारूपविलक्षणाम् । वन्दे रसविधात्रीं तां
सुन्दरीं रसरूपिणीम् ॥ ६ ॥ वन्दे चारुतरां रूपां
क्षेमां क्षेमविधायिनीम् । मर्मज्ञां सर्वकार्येषु दम्प-
त्यो र्भावदायिकाम् ॥ ७ ॥ रसानां रसभावानां
मर्मज्ञां शुभदायिकाम् । वन्दे सखीं तां शुभगां
सुकलनां प्रकाशिकाम् ॥ ८ ॥ वाद्यविद्या प्रवी-
णानां कुशलां पद्मगन्धिकाम् । वन्दे तां सुमहा-
प्रज्ञामुत्फुल्लोत्पललोचनाम् ॥ ९ ॥ सीतारामयो-
श्चैतास्युः सख्योऽष्ठौ रसरूपिकाः । मुख्यास्सर्वेषु
कार्येषु दम्पत्योः प्राणबल्लभाः ॥ १० ॥ एता
सामनुगाः यास्तु सख्यश्च गुणभूषिताः । वन्दे
तासां पदद्वन्दं यास्स्युः नो कुलदेवताः ॥ ११ ॥
एतासां यूथमुख्यानामग्रदासेन वन्दनाम् । कृतां
यश्च पठेन्नित्यं सभाव सुखमश्नुते ॥ १२ ॥

❀ अष्टयाम पदावली ❀

❀ अथ मङ्गलाचरण पद ❀

रागबिलावल—सरयू सरिता राज सवनतै पुरी शिरोमणि रामपुरी वेदनहुं बहु भेद न गाई महिमा अधिक धरी ॥ शिव बिरंचि सनकादिक नारद जपत व्यास जाहि घरी घरी ॥ नामउच्चार होत अघन्यारे दुरमति दूर टरी ॥ जो कोउ वसत अयो-ध्या में सब सम सर नाहिन जात करी ॥ सूकर कूकर सबै विष्णुपद आवत जात ना अटक घरी ॥ जन्मभूमि राघौ की प्यारी मुक्ति भक्ती जहां गरी गरी ॥ अग्रदास को नहिं तहाँ वाँछित बस-त जहाँ सर्वदा हरी ॥ १ ॥

रागधनाश्री—नमो जानकी जगतमनि रूप कमनी ॥ वदन विधु रुचिररद हास इषद सुखद राम हृदकाम की ताप समनी ॥ नमो सुक नासिका नैन मृग मीन छवि भाल भर भाग सौभाग्य दरसे ॥ प्रेमपूरित वैन अलक इकु उर एन सहज अलबेलि

पिय मनहि करसे ॥ नमो कंठ सुकपोतनी उरज उतंगिनी सिंधमधिदेश सम श्रोणि सोहैं ॥ जंघ कदली कर्भ गर्भगति हरति इभु अद्भति नषचन्द्र उपमान को है ॥ नमो विसद सतकुंभ समभाति आभा वपुष मनि षचित विविध भूषनानिधारी ॥ व्यालि वेनी दंड अंग दीपति चंड सुभगता सनि रही राम प्यारी ॥ नमो भरत संगीत गंधर्व कला कोक निधि सुघर वरनारि सब शीश नावें ॥ रुद्र ब्रह्मादि कवि अवर केते कहों स्वामिनी अग्र नहिं पार पावै ॥ २ ॥

जय जय रघुनन्द चन्द रसिकराज प्यारे ॥ अंग २ छवि अनङ्ग कोटि वारि डारे ॥ विहरत नित सरयु तीर संग सोहैं सखिन भीर सिया अंस भुजा डारि अवध के दुलारे ॥ कोई सखि छत्र लिये व्यजन लिये कोई, युगल सखी चौर लिये करत प्राण वारे ॥ सुन्दर सुकुमार गात पुष्पमाल सकुच जात परसत भयभीत होत रूपके उजारे ॥ नख-

शिष भूषन अनूप यथा योग यथा रूप कोटि चन्द कोटि भानु निरखत द्युति हारे ॥ मंद २ मुसुकुरात प्यारी संग करत बात, देखि देखि अग्र अली तन मन धन वारे ॥ ३ ॥

अपनी२ सेवा लिये अष्ट यूथेश्वरियों को सब सखियों सहित महल में प्रवेश करना।

अथ रोलाछन्द ॥ श्री गुरूचरण सरोज रेणु मस्तक निज धरिके। वरणों कछु संक्षेप चरित अन्हिक सियवर के ॥ चन्द्रकला विमला सुचारु शुभगा रसखानी। मदनकला रसमात चारुशीला शुचि वानी ॥ हेमा और सुक्षेम पद्मगंधा सुखदाई। अष्ट सखी ये मुख्य घटज निज शिष्य सुनाई ॥ औरहु हैं जो अष्ट उपसखी गुणन प्रशंसी। लक्ष्मणा सुठिनारि श्यामला है शुभहंसी ॥ सुगमा वंशाध्वजा चित्ररेखा परमाणी। तेजोरूपा

गुणाढ्य और इन्द्रावलि मानी ॥ इनसबकैं लियें नाम ध्यान किये अघ की हानी ॥ सूफहिं रहस ललाम पार जो मन क्रम बानी ॥ अब वरणों सखि मुख्य उपसखी धाम सुहाई ॥ निज २ यूथन लिये बसत जो जँह मनभाई ॥ हेम महल के चहूँ ओर सुठि कुञ्ज बिराजे ॥ विभव एक से एक कहत कवि मति गति लाजे ॥ पूरब उत्तर भाग कुञ्ज श्रीचन्द्रकला के ॥ पूरब दक्षिण भाग कुञ्ज है श्री विमला के ॥ दक्षिण पूरब भाग कुञ्ज है श्री शुभगा के ॥ मदनकला के कुंज याम्य पच्छिम दिसि लेइ कैं ॥ पच्छिम दक्षिण भाग कुंज श्री चारुशिला के ॥ पच्छिम उत्तर भाग कुंज जानो हेमा के ॥ उत्तर पच्छिम भाग कुंज क्षेमा के जानो ॥ उत्तर पूरब भाग पद्मगंधा के मानो ॥ इनके द्वितीया वरन चहूँदिशि कुंज सुहाई ॥ अष्ट उप सखी वसति तहाँ लियें साखि समुदाई ॥ लच्मणा के कुंज जानु उत्तर दिशि माहीं ॥ वसति श्याम-

ला प्राचि दिशा निज कुंज सदाहीं ॥ हंसी दक्षिण दिशा कुंज अति सरस सुहाई ॥ पच्छिम सुगमा कुंज सुभगता को कह गाई ॥ पच्छिम उत्तर मध्य कुंज अति शुभ्र विराजे ॥ वंशध्वजा निवास अहर्निशि बाजन बाजे ॥ उत्तर पूरब मध्य चित्ररेखा के जानो ॥ पूरब याम्य सुकोण तेजोरूपा के मानो ॥ दक्षिण पश्चिम कोण सुइन्द्रावली सुवासा ॥ निज २ ठौर सुवसत अष्ट उप अष्ट हुलासा ॥

अथ सेवा—पान पवावति चन्द्रकला मुखचन्द्र निहारे ॥ विमला चँवर सुशुभ्र सुशुभगा छत्र सुधारे ॥ मदनकला कहि काम कथा पिय मनहिं रिझावत ॥ चारुशिला सुठि गंध लगावत दंपति भावत ॥ हेमा लिये कर झारि सुक्षेमा दर्श दिखावत ॥ पद्मसुगंधा गान अष्ट येहिविधि मन भावत ॥ *॥ अथ उपसखी सेवा—लक्ष्मणा रुचि बीरि लगावति अति सुगंधमय, मणिमय हार

सुधार श्यामला लिए सुठि करमें ॥ हंसी युगल दुकूल सुधारति कहि रसवानी ॥ सुगमा कर लिये व्यजन करति दम्पति मनमानी ॥ वंशध्वजा सुपीकदान लिये सुघर सयानी ॥ अतरदान रसखान चित्ररेखा लिये पानी ॥ तेजोरुपा विचित्र रत्नमय छरी हाथ लिये ॥ मुरछल इन्द्रावली सुकर लिये दम्पति रुखकिये । यहिविधि निज२सौज लिये सखि सिय पिय सेवत ॥ दम्पति रूप निहार और स्वपनहुं नहि लेखत ॥ इन सब के लिये नाम ध्यान अघ दूर पराई ॥ सूझै सियपिय रहस महल सुख पाइ अघाई ॥ प्रातकाल उठि भक्त सुमरि श्री गुरुचरणन को, हनुमदादि जे भक्त और अनुजनरघुवर को ॥ पूर्व कहे जो सखिन सबनके पद शिरनाई ॥ मागे सियपिय महल टहल सब से रसदाई, पुनि एकाग्रचित होय मानसी सुरति दिढावै ॥ निज स्वरूप जो दिव्य नित्यकृत करि सचुपावै ॥ भूषण वसन विचित्र धारि अँग अँग

में तियके ।। गावे सखिन समेत रहस प्यारी प्रीतम
के ।। मंगलथार सजाइ सखिन युत गुरु पँह आवै ।।
चन्द्रकलादिक साथ अग्रमालि महल में जावै ।।
रचना तहाँ अनेकभाँति को वरनि सके अस ।।
शेष गणेश महेश शारदा बुद्धि थके नश ।। को-
टि चन्द्र रवि कोटि तेज चहुँ दिशि में भ्राजत ।।
रहन न पावत तिमिर निशहुँ में दिनसम भासत
तहाँ दिव्य परयंक सुप्यारी प्रीतम तापर ।। छके
मयन रसमत्त सुरति सुख आनन्द पाकर ।। परयं-
कहुँ के चहूँ ओर चौकी रतनन के ।। ता ऊपर बहु
सौज धरे सुखहित सियपिय के ।। यूथ २ सखि आन
जुरी तहँ बैठि फरस पर ।। मुग्धा मध्या प्रौढ़ और
मंजरी प्रेम भर ।। गावति कोकिल वाणि सखिन
भैरव रागनमें ।। वाजत वीण मुचंग सुनूपुर शब्द
स्वरण में ।। आचारज रुख पाइ अग्र झांझरि ह्वै
झांके ।। वह सुख अद्भुत पाइ वहुरि दिशि कतहुं
न ताके ।। पुनि वीणादिक शब्द श्रवण सुनि

दोउ उठि बैठे ॥ आलस युत जँभुआइ लेत अँग २
को अैंठें ॥ पुनः अंगजा अष्ट सुभूषण वसन स-
म्हारी ॥ भई रही विपरीत दोऊ के अंग सुधारी ॥
पुनिदइ परदा खोलि सखिन सब निरखन लागी ॥
कहुँ अँजन सिन्दूर कहूं नखछत अँगरागी ॥
निरखि२ सखि हँसति व्यंगमय वचन परस्पर ॥
बोलति पियहिं सुनाइदेत आदर्श विहसि कर ॥
दरपन हाथमें लेइ पीय निज मुख को निरखत ॥
देखि लक्ष सकुचाय नयन नीचेको करषत ॥ पुनि
दोउ प्रीतम प्यारि उतरि पलका से आये ॥ बैठे
मणिन जड़ाव चौकि तापर हरषाये ॥ मुखमंजन
करवाइ सखिन पुनि वसन उतारी ॥ नई वसन
पहिराइ अल्प अँग भूषण धारी ॥ धूपदीप करि
पुनः मधुर मधुपर्क पवाई ॥ अचवन करि पुनि
पान देइ सुचि गंध लगाई ॥ अति विचित्र आदर्श
दोऊ मुख दरस कराई ॥ पुनि आरति करि निरखि
चन्द्रमुख वलि२ जाई ॥ एहि विधि मंगल ध्यान

करे दूलह दुलहिनि के ॥ अग्र अली सोइ धन्य रसिक जग रस जेहि फीके ॥ बिन रसिकन यह ध्यान और स्वपनहुं नाहि पावे ॥ करि२ज्ञान वि-राग योग भरि जन्म वितावे ॥ ४ ॥

(कवित्त) चन्द्रकला बिमला औ शुभगा मनोजकला चारुशीला हेमा अरु क्षेमा पद्मगंध हैं ॥ प्रातकाल करि शृंगार लीन्हें सखि थाल साज मंगल शुभद्रव्यतामें उठत सुगन्धहै ॥ यूथन अनेक साथ गानतान रसप्रकाश चले जातपुलक गात लाजत गति गयंद है ॥ पहुँचे सब हेम महल पलका समीप जाय दम्पति मुख हेरि अग्र माच्यो रस जंग है। ॥ ❁ ॥ मंगल ॥ मंगल करि शृंगार सुतन मंगलमई ॥ मंगल थार सजाइ द्रव्य मंग-लमई ॥ मंगल यूथ बनाइ सखिन मंगलमई ॥ मंगल करलिये सौज चली मंगलमई ॥ पहुँची हेम निवास जहाँ मंगलमई ॥ निज२सखि लिये वाद्य बजावत रसमई ॥ गावन लागि बहु नारि राग

मंगलमई ।। आलस युत सिय प्यार जगे मँगल-मई ।। सखि सब झांझरि माँह विलोकति सुख-मई ।। देखत युग विपरीत रहस मंगलमई ।। बिन दुकूल झलकात गात सब रसमई ।। लखि सखि सब सुख सिन्धु मगन मंगलमई ।। निज २ वसन सुधार दोऊ मंगलमई ।। बैठे दिए गल बाँह रूप मंगलमई ।। पुनि दइ परदा खोलि झांकि मंग-लमई ।। सखि सब रूप निहारि वारि तनमन दई ।। पुनि दोऊ बैठाइ चौकि रतननमई ।। मंगल द्रव्य दिखाइ प्यारि प्रीतमनई ।। पुनि दोउ के शृंगार करी मंगलमई ।। मंगलभोग लगाइ शेष सखियन लई ।। आरति करि पट वारि वारि मंगलमई ।। अङ्ग २ छवि अवलोकि सखिन बलि २ गई ।। मंगलमय यह ध्यान अग्र जे गावई ।। पियप्यारी रस महल टहल सुख पावई ।। ५ ।। ❀ स्तुति

राग बिलावल—राम रमणि गजगमनि अ-वनिजा चंपक वरन मीन मृगनैनी । वदन इन्दु अरविन्द कुंद द्युति अधरविम्ब विद्रुम पिक वैनी

सीताकै सुन्दर (सौंदर्य) जुसीलवृत उपमा सकल सकुच भइ गैनी ॥ वनितावर त्रैलोक्य उजागर अग्र स्वामि उर आनद दैनी ॥

राग ललित—वदि नारविंद पर वलि कियो प्यारी। इन्दु कुंद विद्रुम जु विंव मिल मीन मृग लीन षँजन छविहारी ॥ नासिका कीर तिल पहुप दाड़िम दसन हसन विगसन कमल कहा करे सारी। भालदिपत मुकर भौहराजी भवँर भृकुटि सरचाप मनमथ सतहारी ॥ चिबुक त्रिभुवनचारु सुभगकपोल तर आनन्द कंद विधिना संवारी राम सुखदैन मधुवैन स्वामिन अग्र जानकी नारि वर नृप दुलारी ॥

अथ रागललित—रजनी अल्प राम उठि बैठे सोइ गइ सीता ह्वै गयो भोर। वार वार विधु वदन विलोकत मानो पीवत सुधा चकोर ॥ हरे हरे चुम्वन चमकुन डर करसों चिबुक चारु टक टोर। जागि परी जानकी तेहीछन आलस पगे

नयन की कोर ॥ बहुरि अँक अरोपि पियाको गोर श्याम शोभित इक जोर । श्री अग्रदास ऐसी छवि छाड़े धृक जाको आवै उर और ॥ ७ ॥

राग ललित—जागे रघुनाथ जानकी आलस भारी । सर्मित है सुरत राग अरुन लोचन अति जभाँत ग्रीवा भुज उभै मेलि प्रीतम पिय प्यारी ॥ लटपटो सिर पाग लाल, कुम कुम बिंदु मध्य-भाल, वरषाऋतु दिनकर मानो अर्भक उन्हारी ॥ जालरंध्र निरखत मुख कुंवरी के नकवेसर सो अटकी लट श्री हाथ आपने सँवारी ॥ सुन्दर सो-हाग निधि जस पूरि रह्यौ विश्व मध्य स्वबस किये रामचन्द्र नहि त्रिभुवन ऐसी नारी । गौर श्याम मनोभिराम वारि फेरि कोटि काम जीवन फल देखि२नाभो वलिहारी ॥ ८ ॥

पद—उठे दोउ अलसाने परभात । दशरथ सुत श्री जनक नन्दिनी सौंधे भींजे गात ॥ विमलादिक सखि चँवर ढुरावति, हरषि निरखि मृदु

गात श्रीअग्रअलीको श्रीरज दीजै सकल भुवन के तात ॥

राग देवगंधार—जीति आइ काम केलि राम रंग राती। जागी निशि चारि जाम वार२जंभाती ॥ पलटे पग धरनि धरति अधर सुधा माती। मंडलभुज जोरि मोरि अङ्ग अङ्ग अंगुराती ॥ टूटे उर हार चिकुर कंचुकी उलटाती। अधरनि छत कल कपोल बनी पीक पांती ॥ नखशिष हरषात गात वानी तुतराती। सीता छवि निरखि निरखि अग्रअली जुड़ाती ॥ ६ ॥

राग ललित—रजनी जागे भामिनि आवत। संग मधुप उच्चरत जय गान ॥ डगमगात पग परत धरनि पर राम अधर रस कीन्हों पान। आलस भरे ऐंडात जानकी, मुदित मगन राखो पियमान ॥ अङ्ग अङ्ग औधाहि देत सुख, सर्बस अर्पि लियो रति दान। सुबस किये सुन्दर वर रघुपति, त्रिभुवन युवती नहिन समान ॥ सहचरि

सबै विलोकि विवश भइ, अग्र अली वलि वारति प्राण ॥ १० ॥

भोर भये नव रंग महल में राजत जनक लडैती लाल । श्याम गौर अंसन भुज दीन्हें, कछु आलस युत नयन बिशाल ॥ प्रेम मगन दोउ उरझ रहे हैं, कनक लता जनु डार तमाल । अग्र सहचरी तन मन वारत उझक झरोखें झाँकति वाल ॥ ११ ॥

अथ आरती—आरति हरण आरती राम की । सुरतरु सुधा धेनु चिन्तामणि वरषा पूरण कामकी ॥ दीपावलि प्रतिविम्ब अङ्ग में शोभा सब सुख धामकी । अग्र अली वरनै जुग चंदपर जानकी जीवन नामकी ॥ १२ ॥

अथ दंतधावन—दतुअन करत सिया रघुराई । सुन्दर सुखद रसीली दतुवन रदन धरत छवि छाई ॥ जीभी कर जल परसत दोऊ मुख प्रक्षाल अंगुछाई । अग्रअली उरझी चितवनिमें मंद मंद मुसक्याई १३

दतुवन करत दोऊ मिलि जोरी, दशरथ सुत श्रीजनक किशोरी ॥ मृगमद मलय कपूर सुवासित युगल दातुवन सखि दइ कोरी ॥ एक प्यारी एक प्रीतम के कर मज्जन लगे दंत सुखसोरी ॥ हँसि२ मज्जन करत परस्पर बाते करत मधुर मुसकोरी ॥ दन्तावलि झलकत दोऊन के, छिटकि रही कर चन्द्रकरोरी ॥ दोउ के दन्त धोवावत हँसि२ अग्र अली सन्मुख रस वोरी ॥ १४ ॥

अथ उवटन के पद—सियप्यारे के सखियाँ लगावति उवटन ॥ पद्मरागमणि की चौकी पर, दुग्ध फेनसम बिछे बिछावन ॥ तापर श्यामा श्याम विराजे, कोटि मदन रति द्युतिन लजावन ॥ अति सुगन्धमय तैल नरायण, तामें और मिलाय सुगंधन ॥ शिर्ष कुसुमहुं ते अति कोमल, अंग२ सुकुमार निरखि तन ॥ लै उवटन कर चहत लगावन, करन कठोर समुझ हिय धरकन ॥ अति भयभीत सहमि सखि लगवाते, लखि अद्भुत

छवि वारति तन धन ॥ कोइ सखि प्रीतम अंग लगावति, अग्र लगावति प्यारी शुभग तन ॥ १५ ॥

उवटन करत रंगीली अलियां ॥ जुगल अली दोउ चरण लगावति, अंग विलोकति छलियां ॥ युगल युगल सखि दोउ भुज मीड़त, उर पीठन युग अलियां ॥ अग्र अली दोउ रसिक परस्पर मुख मींजत छलि वलियां ॥ १६ ॥

कवित्त—प्यारी ओर चन्द्रकला चारुशीला प्यारे ओर अंगन सुगंधमय सुउवटनो लगावती ॥ दोउन के खुले गात अंगन छवि झलमलात ॥ मानो शशि कोटि सुधा किर्ण को लजावती ॥ निरखि२ शुभग गात आनन्द उरमें न मात, कोटिन रति काम आलि दोउन पै वारती ॥ कोमल करमें सुधार उवटनो लै वार वार दोउन सखि हस्त अग्र देती रस भावती ॥ १७ ॥

उवटन करत सियारघुराई ॥ सरस सुगंधको बन्यो उवटन्यो लेकर उर सरसाई ॥ जोइ२ अंग

लगावत प्यारे, प्यारी सोइ मन भाई ॥ अग्रअली के जीवन दोऊ, निरखत नैन सिराई ॥ १८ ॥

सिया अस्नान उवटि नातै अज कीनी केतिक उत्तम नारी ॥ तेइ शील सुन्दर सौभागिनि बहुत गुणन के भारी ॥ जानकी अंग तीरथ में न्हाइ वामभइ जग उजियारी ॥ वनिता श्री रघुवीरवल्लभा, अग्रस्वामिनी नहि कोउ सारी ॥ १६ ॥

अथ मज्जन के पद—मज्जन करत लाल सियप्यारी ॥ मणिमय चौकी ताके चहुँ दिशि सुन्दर लगी कनककी नारी ॥ ता ऊपर बैठे पियप्यारी, अंगन प्रति झलकत द्युति भारी ॥ चहुँ दिशि ते जलधार येक होए, नालिन से वरषत सुठि वारी ॥ उमँगि उमँगि जलधार लेत शिर हँसि २ दोउ मिलि करत खेलारी ॥ अँग अँग मलि २ सखियाँ नहावति निरखि २ तन मन वलिहारी ॥ मज्जन करि अँग पोंछि अग्रआलि, दोउ अँग भूषण वसन सुधारी ॥ २० ॥

मज्जन करत रसिक मनहारी ॥ शुभग सरोवर तामें दोऊ, करिणी संग करि रिव पियप्यारी ॥ सखिनसहित विहरत जलमांही, बहुविधि करत केलि रसकारी ॥ अंजलि भरि जल लेत परस्पर, आंखिन में मारत पिचकारी ॥ वस्त्र भीन अँगन सब झलकत, निरखि२ दोउ रस मतवारी ॥ करि मज्जन दोउ तटपै आये, अग्रसमय सम वसन सुधारी २१

अथ शृंगार के कवित्त—प्यारी कटि सारी जरतारी सुधारी अली, प्यारे कटि धोती सुपीली झलकारी है ॥ प्यारी बक्षोज पर कंचुकी सुधारी झीनी, प्यारे अंग कंचुक सुमोतिन की धारी है ॥ प्यारी गले चन्द्रहार प्यारे गले मुक्तमाल, अंगद औ पहुंची सुमुद्री नगजारी है ॥ चान्द्रिका सुकीट माथ कानन में कर्णफूल कुण्डल आलि अग्रहाथ आपने सुधारी है ॥ २२ ॥

अथ कलेउ के पद— करत कलेउ संग दोउ प्यारे, जनक नन्दिनी अवध दुलारे ॥ बरफी मो-

ढ़क तपत जलेबी, खाजा घेवर अति रुचिकारे ॥ बीजपाक रसगुल्ला खुरमा, मोहनभोग पूप रसदारे पुरी कचौरी मठरी पापरि, गुझिया गोझा मिसरी डारे ॥ और अनेक भाँति के व्यञ्जन कनक कटोरन अग्र सुधारे ॥ २२ ॥

श्रीअम्बाजी के पूजन के पद—मंगल ॥ अँग २ करि शृंगार सखिन सब साथमें पूजन चालि सिय सासु प्रेमरस रागमें ॥ पूजन के सब सौज साज लिये थाल में ॥ गावति नृत्यति चली सखिन उमगात में ॥ पहुंची सासु निवास अंगछविको कहे कोटिन रमा प्रकाश सिया द्युति अँग लहे ॥ देखि सासु अति प्रेमवातसल रस भरे, भरि अँकवार उठाइ लेइ निज हिय धरे ॥ मस्तक को करि घ्रान बलैया लेइके ॥ इकटक मुख छवि निरखि अपनपौ भूलिके ॥ सासु गोद ते उतरि सीय पूजन करी ॥ षोड़स भाँति विधान प्रेमरस में भरी ॥ सासुन दइ आशीष बधू अनुदिन बढ़ै, प्रीतम सँग अनुराग

कबहुँ छिन ना घटे ॥ गंग जमुन नहि रहैं जगत या ना रहैं, अचल रहै अहिवात सियापिया साथ है ॥ पूजन करि सिय सासु आइ निज महल में, प्रीतम करि आलिंग अग्र सिय साथमें ॥ २४ ॥

अथ प्रीतमजू के माताजी के पास जाने के पद—रघुवर तुरँग चढ़े मातु महल को जात ॥ भरत लखन रिपुदमन संग लिये और सखन के व्रात ॥ कंठ सुभग गजमुक्ता माला शिर पगिया झलकात ॥ नख शिष साज शृंगार मनोहर, सखन संग बतरात ॥ धनुषबान करमें सुठि सोहत, लखिअँग मदन लजात ॥ मातु महल के पौरी पहुँचे, तुरँग उतरि चारोभ्रात ॥ मातु समीप बैठि अनुजनयुत करि प्रणाम नमि गात ॥ गोद बैठाइ लई कौशिल्या, मुख चूमत हरषात ॥ बालक वत चेष्टा करि २ के मातु गोद हलरात ॥ जननी देखि २ सुखफूले, आनन्द उर न अमात ॥ बहुत भाँति पकवान मिठाई, निजकरकमल खिलात ॥ करि कलेउ अम्बा प्रणाम

करि, संग सखन चारो भ्रात ॥ अग्रस्वामि निज महल पधारे, प्यारि लपटि भरि गात ॥ २५ ॥

अथ सभा के पद–राग ललित—मुकुट उद्योत होत, दिनदिशि तें ब्रह्मकाल नहि पावत ब्रह्मवित। आतुर अमर अगमनें धावत, राम चरण वंदन निद्रागत ॥ उठ आवत जो जहाँ तहाँ तें, भीर भयसे हलैं परसन कौं॥ भ्रामक भोर मुली ऋषि संध्या दिव वासी आये दरशनको ॥ निवसत निकर असुर सुरनर मुनि कोटघोपजें घोष अपार॥ अग्रदास वालि पाद पीठपर वन्दी वेद करत कै वार २६

चंचल नारि तुम्हारी कीरति दसों दिशाको धावत ॥ सुरनर असुर लोक लोकन मैं, रघुपति तुव जस गावत ॥ घर घर वार फिरत कुलटा ज्यों निकट नाहि सुचि पावत ॥ विसद विसाल जसहि विस्तारत, यह अचरज मोहि आवत ॥ पति वृति प्रण छोड़े है यद्यपि, सबही याहि सुहावत ॥ संतन जीवन मूरि सदाहीं, अग्रदास जिय भावत

अकरन न्याइ कियो एहि धाता ॥ अतिही चतुर सृष्टि रचना को अग्र सोच समुझत अति घाता ॥ फणिपति रघुपति के यश सुनि के जोपै मूड डुलावत ॥ फूट जाय ब्रह्माण्ड खंड सब बहुर करत दुख पावत ॥ याते उरग श्रवण विन सिरजे जगत भंगडर आवै, विशद श्रुत श्रीअग्रस्वामि के कौन न ग्रीव डुलावै ॥ २८ ॥

अथ भोजन के पद—छविले दोउ आवत भोजनसाल ॥ झूमत झुकत चलत मतवारे, रसिक रँगीले लाल ॥ करत कटाक्ष परस्पर लपटत, दीन्हे गर भुज माल ॥ हँसत हँसावत रस उपजावत, संग सहचरी जाल ॥ प्राणप्रिया कछु कहत नवेली, हरषित होत निहाल ॥ अग्रअली बैठे दोउ प्यारे, निरखत भोग विसाल ॥ २९ ॥

जेंवत कुँअर रसिक रघुनन्दन, रस आगरि नागरि सिय प्यारी ॥ छप्पन चार छऊरस उपरस, भोग सौज सुखकारी ॥ चिंतामणि चौकिनपर

कोमल, दुग्ध फेन सम सारी ॥ तिन ऊपर रुचि जानि युगल की रचना न्यारी न्यारी ॥ फल रस-मय अंकुर कंदाली मेवा मधुर सुधारी ॥ चटनी निकर अँचार मुरब्बा, अमित भाँति तरकारी ॥ परसति परम किशोर नागरी, जानि युगल रिझ-वारी ॥ सुरभिवन्त सीतल सरयू जल, मंत्रित मंगल झारी ॥ रसभीनी वतियन विरमावति, प्या-वति निजकर वारी ॥ अंचल विजन कमल कर सारति अति मृदु मंजुवयारी ॥ दम्पति येक थार में जेँवत मोद कंद मुदभारी ॥ अग्रअली के जीवन दोऊ, तृण तोरति वलिहारी ॥ ३० ॥

अथ मध्याह्न समय के सैन पद—रसिक दोउ सयन कुंज को जात ॥ भोजन करि मुख पान सुचर्वित, मंद मंद मुसुकात ॥ आस पास सब सहचरि राजैं, शुभग मनोहर गात ॥ पहुँचे सयन महल के भीतर, सोभा वरनि न जात ॥ अति सुगन्ध चहुँदिशि महँ महँकत, भँवर झुण्ड मड़'

रात ॥ बैठे पलका पर दोउ प्यारे, करत व्यंगरस बात ॥ कोइ सखि मधुरे वीण बजावत, गान करत स्वर सात ॥ पुनि दोउ मिलि अलसान लगे सखि परदा करि चहुँकांत ॥ पौढ़ गये जब दोउ पलका पर, अग्र चरण सुहरात ॥ ३१ ॥

अथ उत्थापन के पद—दिवसमधि सोवत हैं सियप्यारे ॥ उत्थापन के समय समुझि सखि, चहुँ दिशिते आई जुरि सारे ॥ मधुर स्वरन से गावन लागी मधुरयंत्र कर धारे ॥ उठ बैठे अलसाने दोऊ अंशभुजा दोउ धारे ॥ रतन जड़ित चौकी ता ऊपर उतरि पलँग पाँव धारे ॥ मुख प्रछाल सखि पुनि शृंगार करि, रतन कटोरन में रसदारे ॥ मेवा मोदक सखिन पवाई, अचवन करि मुख बीरी सुधारे ॥ करन लगी उत्थापन आरति, अग्र अली निज हाँथ सुधारे ॥ ३२ ॥

अथ चौसर के पद—चौसर खेलत रसिया लाल । प्यारी सँग सुख आल ॥ सारी फल जरिदार

मखमली, सारी श्याम हरित पित लाल ।। पासा हीरा के अति सुन्दर, दोउदिशि सखि युग चाल ।। इतमें चन्द्रकला सखि चतुरी, चारुशीला उतबाल ।। गनि २ गोटी मारत दोऊ, कौतुक करि सियलाल ।। बहुविधि करि चतुराई दोऊ, खेलत नयन विशाल ।। जव प्यारी पासाको फेंकत, कुचयुग इन्द्रकोजाल ।। देखि लाल ठग वग से रहि गये, करसे न पासा चाल ।। भूलि गये चतुराई अपनी जीत लई सिय वाल ।। हारि लाल सिय अधर चूमि लइ, अग्र धूर्त वड़े लाल ।। ३३ ।।

अथ खेटकमें जाने के पद—देखु सखी मृगया खेलन को रामलाल चले जात ।। भरत लषन रिपु-सूदन संगमें, सखन सोह चहु प्राँत ।। चतुरंगिनि सैना संग लीन्हें, दुन्दुभिध्वनि घहरात ।। नख शिष सुन्दर गात मनोहर लखि द्युति काम लजात ।। धनुषबान करमें सुठि सुन्दर, कटि भाथीचम कात ।। चपल तुरंग नचावत हँसि २ सोभा वरनि

...र्षि वाल्मीकि शोध संस्थान
अयोध्या

न जात ॥ अग्र नयन सर नारिन बेधत, लिये जात निज सात ॥ ३४ ॥

रघुवर लागत है मोहि प्यारो ॥ अवधपुरी सरयू तट विहरे, दशरथ प्राण पियारो ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल पीताम्बर पटवारो ॥ नयन विशाल माल मोतिन की, सखि तुम नेक निहारो ॥ अँग २ रूप अनूप बन्यो है, चितसे टरत न टारो ॥ माधुरि मूरति निरखो सजनी, कोटि भानु उजियारो ॥ जानकी नायक सब सुखदायक, गुण गण रूप अपारो ॥ अग्र अली प्रभु की छबि निरखौ, जीवन प्राण हमारो ॥ ३५ ॥

प्रीतम मग जोहति सिय प्यारी ॥ कनक महलके खिरकी पर ह्वै, सखियन युत निरखति सुकुमारी ॥ रहि न जात प्रीतम बिनु देखे, गुणन सुमरि पिय विरह निवारी ॥ छन २ विरहके उठत खुमारी, विकल प्राण मनु मीन बिवारी ॥ कोइ सखि कहि पिय आवत हैं यह आतुर ह्वै तेहि

ओर निहारी ॥ तेहिछिन प्रीतम आय अग्र आलि भरि अँकवार मिली सिय प्यारी ॥ ३६ ॥

आवत रघुनाथ अनुज संग लीन्हे खेल किये चौगाने ॥ अस्त्र सुग जरथ पागे बने विचित्रैं बागे अरुण पीत सित, चँवर छत्र वरवाने ॥ राजकुमारी झरोखन झांकत, करत नयन मधुपाने ॥ केउ वारत तन केउ वारत मन केउ वारत धन पुष्पाञ्जलि वरषाने ॥ मंगल भाजन लै निरांजन जननि निरषि मनमानै ॥ कियो प्रवेश सदन सीता के, अनङ्ग केलि रस अग्र गुण गानै ॥ ३७ ॥

करि सिकार आये रघुनन्दन, संग सखन चारो भ्रात ॥ पितु समीप में जाइ जुहारे, पितु लखि अति हुलसात ॥ निज करकमल उठाइ गोद धरि, चूमत भय सब गात ॥ अति दुलार से पूछत पुनि २ खेटक के कुशलात ॥ कहि सुनाइ खेटक के बातैं, सुनि २ पितु पुलकात ॥ पितु प्रणाम करि निज बैठक में, आयगये रस रात ॥ रतन

जड़े चौकी पर बैठे, बैठक में सब सात ।। श्रम सीकर मुख पर राजत जनु, कमल कोष हिम पाँत ।। चहुँ दिशि सखा सौंज सब लीन्हे, सब सुन्दर सुठि गात ।। कोइ मुख ऊपर मधुर पवन करि, नि-रखि२वालि जात ।। बहु मेवा पकवान मिठाई, सुर-भी जलशितलात । भरि२थालनमें साजि२के अम्ब भेजि बहुभाँत ।। भ्रात सखन युत पावन लागे हँसि२बहु वतरात ।। एक२सखन से बूझत प्यारे घर घर के सब बात ।। करि भोजन अचवन को करिके पान खात मुसकात ।। गान वाद्य होवन लागी पुनि आनन्द कहि नहि जात ।।पुनि प्यारी सुमरन हो आई मिलन हिये उमडात ।। गान वाद्य के करि समाप्त पिय, शीघ्र चले अकुलात ।। अग्रस्वामिनी से मिलि के हिय, अति कीन्ही सितलात ।। ३८ ।।

अथ बाग विहार के पद—बाग विहार करन चले प्यारे, श्री नृपनन्दन जनक नन्दिनी रूप गु-

णन दोउ उजियारे ॥ सखियन करि शृंगार अंग २ पुनि पिय प्यारी के सिंगारे ॥ यूथ २ सखि चली संगमें है गजरथ ऊपर असवारे ॥ कोउ सखि शिरपर छत्र किये है, शुभ्र चँवर कोउ लिये कर धारे ॥ औरन सखि लिये बहुत सौंजकर, पहुँचे जाइ बाग के द्वारे ॥ सखियन युत गजरथ से उतरे, बागेश्वरि सुनि दौरि पधारे ॥ यूथ अनेक संग सखियन लिये पूजन के सामा कर धारे ॥ पट पाँवड़े दइ लै गइ भीतर, रतन वेदिका पर बैठारे ॥ धूप दीप आदिक विधि करि के, सखिन सहित पूजे दोउ प्यारे ॥ पुनि दोउ बाग विहार करन लगे, रौसन पर दोउ फिरत खेलारे ॥ कहुँ दोउ पुष्प उतारि कमलकर, थाके धरे सुन्यारे न्यारे ॥ रचि २ भूषण विविध रंग के, निज २ चतुराई विस्तारे ॥ प्यारी प्यारे अँग पहिरावति, प्यारे प्यारी के अँग धारे ॥ कहुँ मोरन के यूथै नाचैं, कहुँ शुक पढ़ रस चरित अपारे ॥ कहुँ बहुविधि के छुटत फुहारे, ग्रीषमऋतु पावस

सम धारे ॥ पुनि बागेश्वरि फल बहु लाई, पावत मत्त भये दोउ प्यारे ॥ दोउ मिलि लपटत झपटत, अँग २ केलि करत बहुविधि रसदारे ॥ कहुँ फूलन के गेंद खेल करि, कहुँ जलकेलि करत मतवारे ॥ बहुविधि करि विहार दोउ जोरी, अग्र साँझ लखि महल पधारे ॥ ३६ ॥

प्रियाप्रेम परतन्त्र पद—हेम महल के सुभग कुंजमें प्रिया प्रेम लंपट सुकुमारे ॥ कबहूँ एकटक मुख छबि निरखत, श्रम सीकर लखि करत बयारे ॥ कबहूँ निजकर अलक सँवारत, अधर चूमि अति होत सुखारे ॥ कबहूँ निजकर चरण कमल लेइ, मुख निरखत तामें हँसि प्यारे ॥ निज करतल पर राखि प्यारि पद, जावक चित्रको करत विचारे ॥ निज करकमल कठोर समुझि जिय, धर २ धरकत हिय भय भारे ॥ असन होय प्यारी के पदतल, दरकि जाय लागि हाँथ हमारे ॥ चूमि २ निज नयन लगावत डरि २ चित्र महावर धारे ॥ रूप देखि निज

दृष्टि लगन डर, वारि२ जल पियत दुलारे॥ दृष्टि दोष अपने पर लेइके, बारम्बार होत बलिहारे॥ कबहूँ पुष्प विभूषण रचि२, प्यारी अंग करत शृंगारे प्रिया रूप में अति अशक्त ह्वै होन चहत नहि पलकहुँ न्यारे॥ समय जानि गुरु नारिन आवन अति कलेश से हटत दुखारे॥ प्रियाप्रेम परतन्त्र स्वामि लखि, अग्रअली तनमन धन वारे॥ ४०॥

श्री सियजू के पास गुरुजनों को आना—

रूप रासि सीता दुलहिनको देखन आई गुरुजन नारी॥ ऊठत नहि अतिकाल ह्वै गयो, पढ़ि मोहनी मूठ मनो डारी॥ रामचन्द्र मिलवे कँह आतुर, वासुक शेष कठिन भयो भारी॥ अनंग पीन अकुलाइ दंडकर, त्रासत तुरगनि बुद्धि विचारी॥ रवि पूरवज हमारो मंगल, रथ प्रेरन को सुधि जु विसारी॥ ये असु अर्दत उनके नातें वेगि चलो कुल जानि दुखारी। सहि नहि सकत वियोग पलक को, अस्ताचल तन रहै निहारी॥ मदन

तरंगनि मगन अग्रप्रभु पाई जीवन जनकदुलारी ४१

राग विलावल—कोर निशा की कहत केलि ॥ गुरुजन सुनत सकुच सीताके भूषण चाँपि चून दइ मेलि ॥ डार्‍यो व्याज बीज कह्यो भुंजो तो वदि हो जान्यो जो स्वाद ॥ शुक संभ्रममें परयो विभाषनि, भूलि गयो पूरब अनुवाद ॥ नागरि नारि उक्ति यह उपजी, वैदेही वर राजकुमारि ॥ ४२

गुरुजनोंकेआशीर्वाद—साँचो सुहाग जानकी तेरो, रघुवर रसवश कीन्होरी ॥ परसत पानि और नहि परस्यो इक ललनाव्रत लीनोरी ॥ तोसो नारि नही त्रिभुवनमें, पिया प्रेमरस भीनोरी ॥ अग्रस्वामि मन वच क्रम तोको रीझ आलिङ्गन दीनोरी ॥ ४३ ॥

जगत जपत रघुनाथ नाम सब, राम जपत सीताको सुमिरन ॥ रामचन्द्रको ध्यान धरत मुनि बसत जानकी रामचन्द्र मन ॥ शिव विरञ्चि के धनुषधरन धन, रघुवरके मैथिली महाधन । परमहंस कुल रामभजनभर अग्रस्वामि एक पतनीको पन ४४

प्रदोप समय नित्य झूलाके पद—चले दोउ झूलन को हुलसान ॥ पिय प्यारी के नित्य झुलन हैं, नहिं कछु काल प्रमाण ॥ पाइ प्रदोष काल सखियन सँग, गान तान झमकान ॥ पहुँचे झूलन कुंज सुहावन, फूले विविध लतान ॥ मोरन के यूथें बहु विचरैं, नाचत पंख फुलान ॥ जाति२के पक्षी बोलें, भरि रहे शब्द दिशान ॥ चहुंदिशि मणिमय महल विराजैं, मध्य विचित्र वितान ॥ तामधि सुन्दर पर्यो हिंरोला, मोतिन के लहरान तापर बैठे दिये गल बाँहीं प्यारी पिय रसदान ॥ नाना यंत्र लिये सखि गावति, लेत स्वरीली तान ॥ दोउ दिशि ते सखि झुलवन लागी, छवि लखि हिय उमड़ान ॥ दोउ मिलि झूलत हैं रसमाते, अग्र निरखि बलिजान ॥ करि झूलन रस सिन्धुमगन दोउ, चले व्यारीऽस्थान ॥ ४५ ॥

अथ व्यारू के पद—चले दोउ व्यारी कुंज अली ॥ करि विहार झूला के दम्पति, रघुनन्दन

श्रीजनक लली ॥ रतन जड़ित शिविका अति सुन्दर तापर लाल लली ॥ चहुँ दिशि सखियन सौज लिये हैं, नाना रंग रली ॥ पहुँचे ब्यारी कुंज सुभग जहाँ, मध्य सुरतन थली ॥ करि सन्मान सखी कुंजेश्वरि आनन्द भरि उछली ॥ बैठाई रतनन चौकी पर पूजन करि सुभली ॥ नाना विंजन कनक थार में अग्र धरी रस ली ॥ ४६ ॥

ब्यारी करत युगल रस भीने ॥ रचि २ विंजन सखियां परोसैं, बहुतप्रकार नाम को गीनैं ॥ हँसि हँसि पावत हैं प्रिया प्रीतम, रूप माधुरी सखि चित दीने ॥ प्यारे निजकर कमल कवल लै, प्यारी मुख में देत प्रवीने ॥ तै सहि प्यारी ने पिय मुख में, ग्रास पवावति अति मधुरीने ॥ मिसरी बहुत सुगंध मिले जो, दुग्ध पवावति कल्ले सखिने ॥ भोजन करि पुनि अचवन करके, पावत पान सुगंध भरीने ॥ पुनि सखि आरति करि दोउन के, वारम्बार बलइया लीने ॥ पुनि दोउ रास करन

इंगित किये, अग्रचलन के साज सजीने ॥४७॥

रास समय रासकुंज में पधारना—जय२श्री वन प्रमोद रसिकन सुखदाई ॥ सरयु तीर दिव्य भूमि, बेलि लता रही झूमि, फूलन प्रति भँवरा अति गुंजत मनभाई ॥ कुंज२प्रति अनूप विलसत तहँ युगलरूप, श्री जनक लली रघुनन्दन मधुर२ताई ॥ श्रीचन्द्रकला विमलादिक नागरी नवीनी अति, मधुर यंत्र लीने कोइ सप्त स्वर जमाई ॥ गावहिं सब दिव्यतान, सुनहिं लाल अति सुजान रास सरस भींज मंद२मुशुकाई ॥ श्रीअग्रअली विपिनि राज यह सुखतँह नित समाज, जानत कोइ रसिक भेद जिनयह रस पाई ४८

(कवित्त) शुभगा कर छत्र लिये वीणा लिये चन्द्रकला, विमला कर चँवर लिये चन्द्र कीर्ण हारी है ॥ चारुशीला अँतरदान, पानदान मदनकला, हेमा कर झारी विचित्र रंगकारी है ॥ क्षेमाकर व्यजनलिये औरन अनेकसाज, चहूँओर

सखिन लिये मध्य युग विहारी हैं, रास के शृंगार सजे आये रास कुंजमध्य, बैठे सिंहासन अग्रअंस भुजा धारी है ॥ ४६ ॥

श्रीसरयूतट वन अशोक मधि रास रच्यो श्रीअवध विहारी ॥ चहुंदिशि मणिमय कोट वि-राजे, मध्य कुंज बहु न्यारी न्यारी ॥ ताके चहुँ दिशि पादप राजै, त्रैसंपति युत अति रुचिकारी ॥ ता आगे बहु लता कुंज हैं, जाति२ के न्यारी न्यारी ॥ ताके चहुंदिशि कृत्रम पादप, जाति२ मणि के छवि भारी ॥ ताके चहुँ दिशि गमले सुन्दर बहुत भाँति के धरचो सुधारी॥ ताके चहुँ दिशि मोतिन झालर मध्यमें रचना बहुत प्रकारी। मध्य भूमि बहुरंग मणिन के, बेली बूटा विविध प्रकारी, तापर जाजिम स्वेत बिछे हैं, चन्द किर-नि के अति छवि हारी ॥ ता मधि सिंहासन अति सुन्दर स्वेत मणिनमय अति सुठिकारी ॥ तापर बैठे युगल विहारी, श्रीनृपनन्दन जनकदुलारी ॥

جو موجود ہے وہ نظر آتا نہیں یہ تو کیسا دھن ہے نبار اسکو کوئی پاتا نہیں

गौर श्याम छवि को कवि वरणै कोटिकाम रति दुति छवि हारी ॥ प्यारी के तन शुभ्र सुसारी प्यारे अँग जामा झलकारी ॥ प्यारे उर मोतिन के माला, चन्द्रहार सोहत उर प्यारी ॥ कंठ पोत प्यारी गले राजे, पियगले गोप्य विचित्र सँवारी ॥ बाँहुन में अंगद सुठि सोहे, करमें पहुँची अति दुतिकारी ॥ करणफूल प्यारी श्रुति सोभित, पिय श्रुति कुण्डल मकराकारी ॥ प्यारी के शिर मणिन चन्द्रिका, पिय शिर क्रीट भानुमद हारी ॥ विमलादिक सखि चहुँदिशि सोहैं, मध्य नटन लागे पिय प्यारी ॥ कोइ सखि वीण मुचंग काहु लिये जलज तमूरा कोइ२ धारी ॥ बहुत सखी लिये बहुत यंत्र हैं थेइ२ कर नाचति बहुनारी ॥ छम२ नूपुर चरनन बाजै, मनु मोहनी मंत्र ध्वनिकारी ॥ गावति सब रागन रागिनमें, स्वर सुनि इन्द्र बधुन मनहारी ॥ जब प्यारीप्रीतम मिलि गावत, ताथेइ२ औरन प्यारी ॥ स्वर्ग सात पाताल व्यापि गयो

परमानन्द के बह्यो पनारी ।। महारास चहुँ दिशि मे छायो, आकरष्यो जँहतँह नर नारी ।। सब सखि-यन मन पिय अँगधारी, करौं मनोरथ रुचि अनु-सारी ।। सबके रुचि लखिके सियप्रीतम, धार्‌यो बहुत रूप मनहारी ।। जस२जाहि मनोरथ रहेउ, तस२करि सब कियो सुखारी ।। अस्थावर जंगम जो जँहलों आनन्द मुरछा में नर नारी ।। अद्भुत रास रच्यो पिय प्यारी, संग सखिन लिये अग्र दुलारी ।। ५० ।।

सखिन बिच नृतत युगल किशोर ॥ विपि-नि प्रमोद सरोजा तटपर दिव्य भूमि चमकति चहुँ ओर ।। चक्राकार रास मंडल रचि, राग राग-णी के कल सोर ।। चन्द्रकला विमलादि रंगीली वीण मृदंग लिये करधोर ।। चारुशिला शुभगा हेमा लिये, मुरली मुचंग किन्नरी जोर ।। चन्द्रा चन्द्रवती मिलि गावति, क्षेमा स्वरहि भरत रस-बोर। मदनकला करतालबजावत, सारंगी नंदाटंकोर

पिय शिर शुभग सुकीट विराजै चन्द्रिका सीता के शिररोर। चन्द्रहार प्यारीउर चमकत, पियउर मोतिन माल उजोर ॥ कोटि२ रति काम विमोहन, नटवर वेष श्याम अरु गौर ॥ रूप माधुरी कहि न परत है, अँग२ छवि के उठत हिलोर ॥ करसे कर- दोऊ मिलि धारे, नयनन सयन चलत दुहुँ ओर ॥ कबहुँ अधर रस पियत परस्पर, रसमतवारे दोउ चित चोर ॥ प्यारी हाव पिया चित करषत, पिय के भाव प्यारि निज ओर ॥ दोउ रस सिंधु मगन रस लम्पट, अग्रअली नहि चाहत भोर ५१

श्रीप्राणप्रीतमके गान—प्यारी तेरे नयना मदन सरवारि, रतनारी कारी कजरारी, चन्द्रवदन पर अति छवि धारी चितवनि बांकी तिरछी प्यारी, मम हियके घायल करि डारी ॥ मीन कमल खंजन दुतिहारी, सब विधि प्राण अधार हमारी ॥ हँसनि नटनि अरु अंग मरोरनि, देखि२ मैं जाँउ वलिहारी, रूप उजागरि अग्रतियन मैं हो तुम

श्री मिथिलेश दुलारी ॥ ५२ ॥

श्रीप्रिया जी के गान—प्यारे मुखचन्द विलोकहु सजनी ॥ शीश मुकुट मकराकृत कुण्डल, नयन कमलदल अति छवि छवनी ॥ नासामणि सुअधर पर राजत, मनहुँ कमलदल शुक उदवनी ॥ कलकपोल पर अलकैं छूटैं, चन्दउपर मनु बसि बहु अहिनी ॥ कटि कछनी काछे बने आछे पदमें नूपुर अति मनहरनी ॥ मुरनि दुरनि, अरु हँसनि नटनि में, कोटिन काम करौं निवछवनी ॥ रूप उजागर अग्रस्वामि मेरे, मम हिय के हैं प्राण संजिवनी ॥ ५३ ॥

सखियों के गान—सबकी शोभा सिमिटि लई ॥ बैदेही के वदन विलोकत, अंतरभूत भई ॥ गज गति हंस जङ्घ कदली कटि, केहरि दसन अनार ॥ कुच नारंगी कान्ति कलधौतहिं, मुख विधु अम्बुज चारु ॥ ग्रीवा कंबु कपोत अधर, विद्रुम दुति नासा कीर, नयन मीन नागिनि वेनी अहि

कोकिल गिरा गंभीर ॥ अहित भये सकुच सब जित तित तप व्रत जाय लियो ॥ कोउ वन कोउ आकाश अग्नि जल, कोउ पाताल गयो ॥ वलि अरु वरुण वाह्नि वासवमिलि वदत भये यह बात ॥ सीताशरण रहो सबताजिके, अग्रदास वलिजात ॥

सखियों के गान–राग कल्याण — वलिहारी सीता वदन की ॥ उज्जल अरुण परस्पर दीपति अधर विम्बफल रदनकी ॥ वेसरमुक्ता चपल होत अति, शोभा वीरी अदनकी ॥ लोचन चारु चितै मधु वरषत, रामकामदुख कदनकी ॥ सची सहित शोभा त्रिभुवनकी वारों भामिनि मदनकी ॥ अग्रस्वामिनी विशद चंदमुख, शौभग हद सुख सदनकी ॥ ५५ ॥

अथ जलकेलि के पद — रसिक दोउ सरयूकूल चले ॥ रास श्रमितहै संग सखिन लिये, दम्पति दिये भुज गले ॥ करन लगे जलकेलि विविधि विधि, दोऊ रंग रसरले ॥ प्रीतमडूबि प्रियापदगहिके

ऐंचि लेत जलतले ॥ प्यारी करकमलन ताड़न कर, जल पिय आंखि दले ॥ प्रीतम के गति भूलि गई सब, दोउ कर आंखि मलै ॥ काहू के कटि वसन छोड़ि पिय, तटपर आय चले ॥ वह सखि नें अतिलाज श्रमित ह्वै, जलसे नहिं निकले ॥ पुनि सियने पियसे पट लइकें, दइ सखि हाँथतले ॥ करि जलकेलि प्रियाप्रीतम दोउ, जलसे आय थले ॥ करि शृंगार अग्रसखियन युत, आइगये महले ५६

बैठे सुखपाल लाल आवत महल में जू ॥ आलसभरे उनींदे लोचन अति अलसाने कछु मदन गहल में जू ॥ चुनि२ कलियां सेज बनाई चोवा चन्दन चरच चहल में जू ॥ पौढ़े दशरथ राज कुंवर वर अग्र अली तहां दासी टहल में जू ॥ ५७ ॥

सैनभोग के पद—सखी सब सैनभोग लेआई मेवा मिशरी दूध मलाई और अनेक मिठाई ॥ शुरभी युत विंजन बहु तेरे, थारन भरी सुहाई ॥

पान पदारथ सुचि सुगंधमय, बहु औषधन मिलाई ॥ पावत तुष्ट पुष्ट होय जावें रास जनित श्रमहाई ॥ चषकन में भरि धरि आगे में दम्पति के मनभाई ॥ पावन लगे रसिक दोउ प्यारे, करि २ विंजन बड़ाई ॥ हँसत हँसावत सखिन पवावति, बातन में विरमाई ॥ करि भोजन अचवन पुनि करिकै, पान पाइ मुसकाई ॥ सैन आरती अग्र करी जब पौढ़े पलँग सुहाई ॥ ५८ ॥

पद ॥ १ ॥ पौढ़िये रसिक जानकि रमण ॥ सर्व ऋतु के भोग यामें, महल अति मनहरन ॥ विविधि रचना बनी है जँह तँह, विधि निपुणता हसन ॥ सेज रचना बनत कहि नहि मनहु मनसिज भवन ॥ पिया प्यारी ताहि ऊपर, केलि कुरु सुख सदन ॥ यहइ आशा अग्रसखियन, सुफल कुरु ललि ललन ॥ ५९ ॥

सयन के पद—सुख सेज पौढ़िये रामसीतारमन ॥ रागरंग रुचिर शौरभ सौज विटिका, चित्र

चंदवा विविधि सुन्दर भवन ॥ रूप लावण्य गुण कोकविद्या कुशल, बचन रचना विदुष पिया पारस गवन ॥ जनकजा राजीव नैनकि मैन छवि अग्रसहचरी सुगम अवर जाने कवन ॥ ६० ॥

पद—महल में सोवत हैं दोउ प्यारे ॥ रतन जड़ित पलका अति सुन्दर, मयन मनहुं तन धारे ॥ ताके ऊपर विस्तर पयके फेन लजावन हारे ॥ तापर पौढे युगल बिहारी हर रिपुकला सुधारे ॥ करत केलि नाना विधि दम्पति, सखियन नयन निहारे । हँसि२ बातें करत परस्पर, वर्षत मोद अपारे ॥ अग्रस्वामिनी स्वामी दोऊ जीवन प्राण अधारे ॥ ६१

करत दोउ सय्या पर बातें ॥ यांचत प्यारे रति प्यारी से, बहु भाँतिन फुसलाते ॥ जब पिय प्यारी उरज गहत हैं, नहि२ कहि२ हाँथ हटाते ॥ प्रीतम बहु रस बातें कहि२, प्यारी के चशकाते ॥ दयि खिलाइ हिय कमल कली जिमि, करन लगे रसघाते ॥ प्यारी अधर पान कर प्यारे, भये मद-

न रसमाते ॥ मर्दत प्यारी उरज निठुर होय, तनक दया नहि लाते ॥ प्यारी नखदंतों के छत से, प्यारे अङ्ग उपटाते ॥ जनु तमाल के साखन ऊपर, शयमुनिन झलकाते ॥ लपटत झपटत जुटत परस्पर तकि२ निज२ घाते ॥ टुटि२ मोतिन हार पलँगपर, विथरे हैंचहुकाँते ॥ जनु अकाशमें बहुत रूप है शुक्र सुभग दरसाते ॥ सुरतानन्द सिन्धु दोउ तैरत अग्रनिरखि रसमाते ॥ ६२ ॥

पद—निरखु सखि सय्यापर दोउ केलैं, अंगन अंग समेलैं ॥ विथुरे कच मोतिनके हारें, टूटि२ विथरैलैं ॥ गिरि शुमेर पर शम्भु विराजैं, तापर शेष वसैलैं ॥ पंचफनापर पंचचन्द हैं, शोभा अति दरशैलै ॥ विम्ब२को पान करत रस, सुधा मुधा करदैलै ॥ अर्धचन्द्र लाँछित अंगनमें, उपमा अस कवि दैलै ॥ लाल मुनी के अवली मानो, तरुतमाल बिचरैलै ॥ किधौं वीर के अंगन ऊपर शस्त्र घाव उपटैलै ॥ बिन दुकूल दोऊ सय्यापर, निज२

दाव तकैलै ॥ जनु युग द्विरद क्षीरसागरमें, जुटन दाव निज लैलै ॥ कीधौं तरुतमाल के ऊपर कनक लता लपटैलै ॥ अग्रस्वामिनी स्वामी दोऊ, खेल मधुर रस खेलै ॥ यह सुख निरखि २ के अद्भुत, सखियन वालि२ कैलै ॥ ६३

सोये सेज प्रियाप्रीतम दोउ अतिसै करि निद्रा आधीन ॥ जक्ष कर्दम कंचुकी सिया उर, तामे भँवर भयो एकलीन ॥ वासलुब्ध को शब्द श्रवण सुनि संभ्रम राम विलोकन वाम ॥ रही पुष्प अत्र शेष हृदैमें, सायक सपदि मारि गये काम ॥ प्रेम विकल परतीत न मानत, वैदेही हित पावत खेद ॥ अग्रस्वामि आधीन प्रियाके, मिथ्या दुख आयो तन स्वेद ॥ ६४ ॥

चलो सखि सोगये राज किशोर ॥ मणिन जड़ितको पलंग मनोहर, ताके छवि अति जोर ॥ मिलि सखियां सब चरण पलोटत, रस बस पियघन घोर ॥ चौकी वालि सजग होय रहियो, लागे न !

कहुँ दृगचोर ॥ नूपुर दाबि चलौ मोरि सजनी, होयन जेहि पग सोर ॥ सुभग सेज सियराम सयन लखि, ललचतहै मनमोर ॥ श्रीअग्रअली दम्पति दरशन हित, आवहिंगी बड़े भोर ॥ ६५ ॥

महलसे सखियों को अपने२ कुंज में पधारना—चली सब युगछबि हियमें धरी ॥ सोय गये सखि पियप्यारी अब, आनन्द रस में भरी ॥ लाल लली गुण कहत परस्पर, आनन्द सिंधु परी निज२कुंज के ओर गई सखि, यूथेश्वरि सबरी ॥ सबसे मिलि सँग इन्दुकलाथल, अग्रगई स्वथरी ॥ ६६ ॥

चहियत कृपा लली सीताकी ॥ नवधाभक्ति ज्ञान का करना मिटगइ संक वेद गीता की ॥ षटमत वेद पुरान पुकारत, करत वाद नर बपु वीताकी ॥ झगरो करै अरुझै नहीं सुरझै, मिटत न एक छैत भीताकी ॥ जाकी ओर तनिक हँसि हेरत, करत सहाय रामजी ताकी ॥ अग्रअली भजु

१।१० अयोध्या
श्री

मुद्रक—एच० जी० श्रीवास्तव्य
श्रीसीताराम प्रिंटिंग ऐण्ड पब्लिशिंग वर्क्स,
श्री अयोध्या जी।